विचार बिन्दु

कितने देव, कितने धर्म, कितने पंथ चल पड़े, पर इस शोकग्रस्त संसार को केवल दयावानों की आवश्यकता है। –विलकास्य

गणवेश पर आवेश क्यों?

प्रधानमंत्री जी ने 2014 के लगभग चुनाव प्रचार के समय एक ऐसे भारत की कल्पना जनता के समक्ष प्रस्तुत की थी जिसमें भारत के मुसलमान एक हाथ में कुरान और दूसरे हाथ में कंप्यूटर लिए हों। हाल ही में कर्नाटक के उडुपी जिले के एक महाविद्यालय में हिजाब पहनी हुई एक मुस्लिम लड़की मुस्कान को जिस प्रकार कुछ कट्टर वादियों में घेर कर परेशान किया, उससे उनकी इस कल्पना को ठेस ही पहुंची है।

इस घटना के बाद पूरे देश में मुस्लिम संगठनों ने अपनी महिलाओं को आगे कर अलग-अलग जगह प्रदर्शन किए। वे हिजाब पहनने को इस्लाम का आवश्यक अंग बता रहे हैं जबकि कई मुस्लिम विद्वान ऐसा नहीं मानते हैं। हम यहां पर इस प्रश्न पर चर्चा नहीं करेंगे कि मुस्लिम लड़कियों को हिजाब पहनना चाहिए अथवा नहीं। हम इस लेख में केवल अपना विषय इस बात पर सीमित रखेंगे कि विद्यालय में पढ़ने वाली मुस्लिम लड़की का विरोध कट्टरवादी संगठनों ने जिस प्रकार उत्तेजनापूर्वक किया, वह उचित था अथवा अनुचित। कहा गया है कि इस महाविद्यालय में पूर्व में भी कई मुस्लिम लड़कियां हिजाब पहनकर आती रही हैं। अब तक किसी ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया। महाविद्यालय प्रबंधन ने दो माह पूर्व आदेश जारी कर हिजाब पहनकर पढ़ने वाली लड़कियों पर प्रतिबंध लगा दिया। इसके बाद वह घटना हुई जिसका ऊपर उल्लेख किया गया है। कई लोग अनजाने में हिजाब को बुर्का मान रहे हैं जो गलत है। बुर्का और हिजाब अलग-अलग परिवेश हैं। हिजाब कुछ कुछ एक दुपट्टे जैसा है जिससे सिर ढका जाता है। लड़कियां हिजाब पहनकर केवल घर से महाविद्यालय तक जाती हैं एवं उसके बाद महाविद्यालय में ही हिजाब उतार कर निर्धारित यूनिफॉर्म में क्लास में बैठती हैं। यह पूरा विवाद महाविद्यालय स्तर पर ही सरलता से संवाद के माध्यम से निपटाया जा सकता था। प्राचार्य, हिजाब पहनने वाली छात्राओं के माता-पिता को समझाइश कर सकते थे। इसके बाद यह प्रकरण जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर कतई नहीं बढ़ता।

उडुपी के महाविद्यालय में छात्रों के अतिरिक्त बाहर के अन्य संगठनों के उग्रवादी लोगों ने महाविद्यालय में प्रवेश कर इसे अलग ही रूप दे दिया।

जहां तक ड्रेस कोड का प्रश्न है, कई शिक्षण संस्थानों ने अपने छात्र छात्राओं हेतु एक यूनिफॉर्म निर्धारित कर रखी है। सामान्यतया, सभी विद्यार्थी उसी को पहनकर विद्यालय-महाविद्यालय में आते हैं। इसका उद्देश्य यही है कि किसी भी प्रकार की धार्मिक अथवा वर्ग विशेष की पहचान प्रकट नहीं हो और भेदभाव का कोई भाव उत्पन्न न हो । सभी विद्यार्थी समान रूप से व्यवहार पा सकें। इससे इस बात की संभावना समाप्त हो जाती है कि अमीर परिवारों के बच्चे विभिन्न प्रकार के महंगे फैंसी कपड़े पहनकर विद्यालय में ना आएं ताकि कम आय वाले परिवारों के बच्चों में किसी प्रकार की हीन भावना विकसित ना हो। जहां तक कर्नाटक के इस महाविद्यालय में ड्रेस पहन कर आने का प्रश्न है, इसका निर्णय महाविद्यालय प्रबंधन को करने का अधिकार है। यदि कोई लड़की इसका उल्लंघन करती है तो उसके विरुद्ध कार्यवाही का अधिकार केवल महाविद्यालय प्रबंधन का है। इसमें किसी भी समुदाय के किसी भी व्यक्ति का कोई लेना-देना नहीं होना चाहिए।

महाविद्यालय-विद्यालय से जब हम यह उनके प्रांगण से बाहर ले आते हैं एवं उनका राजनीतिकरण कर देते हैं तब ही समस्या प्रारंभ होती है, और उसके पश्चात प्रक्रिया-प्रतिक्रिया का ऐसा दौर प्रारंभ हो जाता है जो कई बार हिंसात्मक रूप भी ले लेता है। घर से महाविद्यालय आते समय मुस्लिम लड़कियां क्या पहनती हैं, इससे कोई सरोकार किसी को नहीं होना चाहिए। जब एक बार प्रांगण में प्रवेश करने के पश्चात यदि वह निर्धारित ड्रेस पहनती है, तो किसी को क्या आपत्ति हो सकती है? इसके अलावा यह भी तय किया जा सकता है कोई लड़की निर्धारित यूनीफॉर्म की रंग का कोई अलग पहनावा पहने तो किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए। इसी प्रकार यदि मुस्लिम छात्राएं हिजाब पहने और उसका रंग भी यूनिफार्म का हो तो इस पर लचीला रुख अपनाया जाना चाहिए।

वैसे भी सिख समुदाय के छात्रों को केश रखने, पगड़ी पहनने एवं कड़ा पहनने की छूट पहले ही सभी संस्थानों दे रखी है। इस प्रकार के अनावश्यक विवाद के कारण हमने शिक्षा प्राप्त करने के मूल विषय से भटका दिया है। यदि मुस्लिम लड़कियों को विद्यालय में पढ़ने से इसलिए वंचित किया जाएगा कि वे हिजाब पहनकर आई हैं, तो हम मुस्लिम लड़कियों के प्रति घोर अन्याय ही करेंगे। वैसे ही मुस्लिम समुदाय में शिक्षा अपेक्षाकृत काफी कम है, विशेषकर लड़कियों में, और अब जबकि वे आगे बढ़कर विभिन्न क्षेत्रों में शिक्षा प्राप्त कर रही हैं तो केवल वेशभूषा के आधार पर उनके प्रति भेदभाव करना और उन्हें शिक्षा से वंचित करना होगा। क्या हम ऐसा भारत चाहते हैं जिसमें कुछ समुदाय शिक्षा से केवल वेश-भूषा के कारण वंचित रहें? उडुपी में भी महाविद्यालय के प्राचार्य एवं छात्र आपस में बात करके इस बात को समाप्त कर सकते थे और शायद हल निकाल भी लिया गया था, किंतु कुछ कट्टर पंथी संगठन जोर-जबरदस्ती से विरोध किया, जिससे यह मामला तूल पकड़ गया और सर्वोच्च न्यायालय तक पहुंच गया। प्रकरण में कर्नाटक उच्च न्यायालय ने महाविद्यालय के हिजाब पर प्रतिबंध लगाने वाले आदेश पर स्थगन देने से मना कर दिया है। सुनवाई होने के पश्चात इस पर अंतिम निर्णय न्यायालय संविधान के प्रावधानों के अंतर्गत पारित करेगा। इसके पश्चात संभवत: इस समस्या का निकल जाएगा। कुछ लोग इसे उच्चतम न्यायालय में ले गए थे, उस पर उच्चतम न्यायालय ने इसका संज्ञान लेने से फिलहाल मना कर दिया, जो शायद उचित ही था।

> **शिक्षा ही वह माध्यम है जो विभिन्न धर्मों, समुदायों की दूरियों को कम कर सकती है। अब यदि शिक्षा के मंदिर को ही हम धर्मान्धता को बढ़ाने एवं कटुता का साधन बना देंगे तो हम देश को दशकों पीछे धकेल देंगे। विचार इस पर होना चाहिए कि कैसे अल्प संख्यक सहित सभी समुदाय विशेषकर महिलाएं कैसे तीव्र गति से शिक्षित हों।**

हमारा देश, अन्य देशों से एकदम अलग तरह का है, जहां अनेक प्रकार की भाषाएं बोली जाती हैं, कई धर्म हैं। संविधान में भी देश को धर्मनिरपेक्ष माना है। इसका अर्थ यही है कि प्रत्येक नागरिक को अपने धर्म का पालन करने और उसके अनुसार जीवनयापन करने की स्वतंत्रता है। हमने खेलों में भी देखा है कि ईरान जैसे देशों की महिला खिलाड़ियों ने, हिजाब में पूरे शरीर को ढककर, कबड्डी जैसे खेल में न केवल भाग भाग लिया बल्कि एशियाई खेलों में उन्होंने स्वर्ण पदक भी प्राप्त किया। इसका तात्पर्य है कि किसी की वेशभूषा उसके खेलने तक में आड़े नहीं आती है, तो फिर किसी भी शिक्षण संस्थान में शिक्षा ग्रहण करने पर यह आड़े क्यों आनी चाहिए? जब तक किसी की वेशभूषा अपने काम या पढ़ाई में रुकावट उत्पन्न ना करें, नागरिक को यह स्वतंत्रता होनी चाहिए कि वे अपनी मान्यताओं के अनुसार कपडे पहन सकें। इनके आधार पर किसी भी व्यक्ति को देशभक्त या देशद्रोही घोषित करना उचित नहीं होगा और यह समाज को यह विभाजित करने की ओर ही प्रेरित करेगा।

भारत की प्रगति के लिए आवश्यक है कि विभाजनकारी तत्त्वों पर रोक लगाई जाए ना कि उन्हें प्रोत्साहित किया जाए। संभवतया ऐसा उत्तर प्रदेश में चल रहे हैं विधानसभाओं के चुनाव को ध्यान में रखकर किया गया हो ऐसी घटनाओं के संबंध में जो बयान दिए जाते हैं, वे विभिन्न समुदायों में खाई उत्पन्न करने का कार्य करते हैं, जो किसी भी रूप से देश हित में नहीं कहा जा सकता है। जब किसी ने सिख धर्म की वेशभूषा धारण करने पर आज तक कोई आपत्ति नहीं की, और ना होनी चाहिए, तो फिर मुस्लिम लड़कियों के हिजाब पहनने पर आपत्ति क्यों? क्या यह प्रश्न संबंधित परिवारों पर अथवा युवतियों पर नहीं छोड़ दिया जाना चाहिए कि वह क्या पहनना चाहती हैं और क्या नहीं। यदि कोई भी वेशभूषा किसी कानून का उल्लंघन नहीं करती है तो उस पर रोक लगाना किसी भी समुदाय विशेष के विशेषकर महिलाओं के प्रगति में बाधक ही बनेगा। यदि धार्मिक चिन्हों का धारण करना गलत है तो फिर यह भी गलत है कि नेतागण भगवा वस्त्र धारण कर, माथे पर बड़ा टीका और चंदन लगाकर, सार्वजनिक रूप से दूरदर्शन पर इसका प्रचार-प्रसार करें। गंगा में डुबकी भी गेरुआ वस्त्र धारण कर लगाई थी। जब कोई सरकारी पद पर बैठे व्यक्ति धार्मिक पहचान को धारण कर उनका न केवल सार्वजनिक प्रदर्शन करता है अपितु उस पर गर्व का भी अनुभव करते हैं, तो फिर अन्य नागरिकों को जो किसी सरकारी पद पर भी ना हो, उन्हें ऐसा करने से रोकना उनकी स्वतन्त्रता को नियंत्रित करने के समान होगा, जिसकी हमारा संविधान अनुमति नहीं देता है।

शिक्षा ही वह माध्यम है जो विभिन्न धर्मों, समुदायों की दूरियों को कम कर सकती है। अब यदि शिक्षा के मंदिर को ही हम धर्मान्धता को बढ़ाने एवं कटुता का साधन बना देंगे तो हम देश को दशकों पीछे धकेल देंगे। विचार इस पर होना चाहिए कि कैसे अल्प संख्यक सहित सभी समुदाय विशेषकर महिलाएं कैसे तीव्र गति से शिक्षित हों। इसके हम इस पर उलझे हैं कि लड़कियां हिजाब पहने या नहीं। वर्तमान समय में हिजाब को हटाना भी है तो पहल संबंधित अल्पसंख्यक समुदाय के नेतृत्व को ही करनी होगी। जब अन्य समुदायों के लोग ऐसा करेंगे तो इसकी तीखी प्रतिक्रिया होना स्वाभाविक है।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

(16 फरवरी - रविदास जयंती विशेष)

समाज सुधारक परमसंत गुरु रविदास

डा. जे. के. गर्ग

संत रविदास

रविदास जी सुप्रसिद्ध संत रामानंद और कबीर दास के शिष्य थे। जूते बनाना रविदास जी का पारिवारिक व्यवसाय था। जिसे वे पूरी लगन तथा कर्तव्य निष्ठा से करते थे। उनकी वाणी का इतना व्यापक प्रभाव पड़ा कि समाज के सभी वर्गों के लोग उनके भक्त बन गये। कहा जाता है कि मीराबाई उनकी भक्ति-भावना से बहुत प्रभावित हुईं और उनकी शिष्य बन गयी थीं। मुग़ल शासक बाबर भी रविदास जी का अनुयायी बन गया और उनसे प्रभावित होकर बाबर अच्छे सामाजिक कार्य भी करने लगा। रविदास जी मानते थे कि यदि आदमी का मन पवित्र है और वो अपना कार्य करते हुए, ईश्वर की भक्ति में तल्लीन रहता है और उसके लिये प्रभु भक्ति से से बढ़कर कोई तीर्थ-स्नान नहीं है, तो ऐसा इंसान सच्चा भक्त है। कोई भी व्यक्ति छोटा या बड़ा अपने जन्म के कारण नहीं बल्कि अपने कर्म के कारण होता है।

उन्होंने कहा कि कर्म हमारा धर्म है और फल हमारा सौभाग्य। काम, क्रोध लोभ, अहंकार, मोह और ईर्ष्या मनुष्य के सबसे बड़े शत्रु है जो मनुष्य के चरित्र, आचरण दोनों को नष्ट-भ्रष्ट कर देते हैं। रविदास जी का मानना था कि जिसके हृदय में रात-दिन राम समाये रहते हैं, ऐसा भक्त वास्तव के अंदर राम के समान ही है। इंसान ने अपने आपको भी जातियों, छुत-अछूत वर्गों में बांट दिया है। इन जातियों के विभाजन से इंसान अलग-अलग बंट जाता है, जिसके फलस्वरूप अंत में इन्सान और इंसानियत भी खत्म हो जाती है लेकिन समाज को विभाजित करने वाली जाती खत्म नहीं होती है।

जिस समाज में विद्या और बुद्धि का अभाव है और जहां अज्ञानता है, ऐसा समाज कभी भी उन्नित नहीं कर सकता है। रविदास जी ने आर्थिक विषमता, गरीबी, बेकारी और बदहाली से मुक्ति के लिए श्रम, स्वावलंबन का सिद्धांत दिया था। संत रविदास ने बाह्याडंबर, ढकोसला आदि का खंडन किया जिससे हिंदू, मुस्लिम संस्कृति के मध्य की विशाल खाई को पाटने में काफी सहायता मिली।

इस महान संत की वाणी सदैव देश के दीन-हीन, दलित-शोषितों के उद्धार के लिए मुखर रही। रविदास जी जीवन पर्यंत भेदभाव को समूल नष्ट करने के लिए प्रयासरत रहे। गुरु रविदास ने वैश्विक बंधुता, सहिष्णुता, पड़ोसियों के लिये प्यार और देश प्रेम का पाठ पढ़ाया। सच्चाई यही है कि संत रविदास जी के 40-41 पद गुरु ग्रन्थ साहब में मिलते हैं जिसका सम्पादन गुरु अर्जुन सिंह देव ने 16वीं सदी में किया था। दादूपंथी की पञ्च वाणी परंपरा में भी गुरु रविदास जी की बहुत सी कवितायें, दोहे और सूक्तियां शामिल हैं। राजस्थान के चित्तौड़गढ़ जिले में मीरा के मंदिर के सामने एक छोटी छत्री है, जिसमे मान्यताओं के मुताबिक रविदासजी के पदचिन्ह स्थापित है। रैदास नाम से प्रसिद्ध संत रविदास का जन्म बनारस के सीर गोवर्धन में हुआ था । उनके जन्म स्थल पर एक भव्य मंदिर निर्मित किया गया है और उनकी जयंती के मौके पर यहां तीन दिन तक उत्सव मनाया जाता है।

वाराणसी में श्री गुरु रविदास पार्क है जो नगवा में उनके यादगार के रुप में बनाया गया है जो उनके नाम पर गुरु रविदास स्मारक और पार्क बना है। वाराणसी में पार्क से बिल्कुल सटा हुआ उनके नाम पर गंगा नदी के किनारे लागू करने के लिये गुरु रविदास घाट भी भारत सरकार द्वारा प्रस्तावित है। वाराणसी के लंका चौराहे पर एक बड़ा गेट है जो इनके सम्मान में बनाया गया है। ज्ञानपुर जिले के निकट संत रविदास नगर है जो कि पहले भदोही नाम से था

अब उसका नाम भी संत रविदास नगर है। रविदास को साधु-संतों की सहायता करने में उनको विशेष आनंद मिलता था। रविदास साधु-संतों को अपने हाथ से बने जूते मुफ्त में ही दे दिया करते थे। रविदास के अनोखे व्यवहार से व्यथित और खिन्न होकर उनके पिता ने उन्हें और उनके परिवार को घर से निकाल दिया था।

हिंदू पंचांग के अनुसार माघ माह की पूर्णिमा के दिन गुरु रविदास जयंती मनाई जाती है। 16 फरवरी 2022 को रविदास जी की 645 वीं जयंती मनाई जा रही है। संत रविदास के जन्म को 645 वर्ष बीत जाने के बाद भी उनके उपदेश, दोहे आज भी मानव मात्र के कल्याण के लिये जरूरी है। उनके दोहे मन मन ही पूजा मन ही धूप, मन ही सेऊँ सहज सरूप में जीवन की सच्चाई छिपी हुयी है। आज के असहिष्णुता, पारस्परिक अविश्वास, धार्मिक उन्माद और वैमनस्यता के विषाक्त वातावरण में रविदास जी की शिक्षाएं हमें सही रास्ता दिखा सकती है जिससे हम देश के अंदर धार्मिक सद्भाव सौहार्द आपसी भाईचारे और जाति-पाती विहीन सभ्य समाज का निर्माण कर सकते हैं।

डा. जे. के. गर्ग
पूर्व संयुक्त निदेशक कालेज शिक्षा जयपुर

राजस्थान माइनर मिनरल उद्योग संघ संयोजक राजपुरोहित का सीएम के नाम खत

खनिज फेल्सपार के निकासी नियमों में संशोधन 3000 बॉल मिल उद्योगों के संरक्षण की रखी मांग

राजस्थान माइनर मिनरल उद्योग संघ ने सीएम के नाम खत लिखकर राज्य में इन्वेस्टमेंट प्रमोशन के लिए चल रहे अभियान को अधिक गति देने के लिए जरूरी सुझाव भेजे हैं और राज्य के अप्रधान खनिज पट्टों से निर्गमित होने वाले सभी तरह के अप्रधान खनिजों के औधोगिक उपयोग व औधोगिक व रोजगार परक विकास पर नीति बनाने की मांग की है।

संघ ने निवेदन किया है कि देश के सिरेमिक टाइल्स, इत्यादि के औधोगिक निर्माण में काम आने वाले खनिज फेल्सपार की वर्तमान में करीब 3000 फेल्सपार ग्राइंडिंग औधोगिक इकाइयां है जो खनिज के कच्चे रूप में ही खानों से सीधे ही पडोसी राज्य में निर्गमित हो जाने से अप्रतियोगी हो गयी है व बन्द होने की तरफ बढ रही है। इन औधोगिक इकाइयों के भविष्य को सुरक्षित करने,राज्य में नये विनिवेश को आकर्षित कर राज्य में रोजगार व आय के साधन बढाने एवं खनिज फेल्सपार खानों में काम करने वाले मजदूरों के जीवन स्तर को ऊंचा उठाने की मांग की है । खनिज निर्माण सामग्री के रूप में राज्य के लोगो के निर्माण सम्बन्धी उपयोग के लिए सस्ते व सुलभ उपलब्ध हो इस उद्देश्य से संवैधानिक रूप से राज्य सरकारों के अधीन किये गए है

> **राज्य में रोजगार व औधोगिक विनिवेश को बढ़ाने पर किया ध्यानाकर्षण**

और खनन पट्टे स्वीकृत कर लागू करने का अधिकार संवैधानिक रूप से केंद्र सरकार ने अपने पास रखा है। खनिज फेल्सपार कच्चे ही रूप में वार्षिक 1.8 करोड टन मात्रा में राज्य से बाहर औधोगिक प्रयोजनार्थ निर्गमन होने से राज्य के खजाने को साधारण रॉयल्टी राशि के अतिरिक्त कोई आय प्राप्त नही हो रही है।

फेल्सपार को कच्चे माल की परिभाषा में शामिल कर उनके कच्चे ही राज्य से बाहर औधोगिक प्रयोजनार्थ निकास करने पर 5 गुना रॉयल्टी राशि वसूलने का नियम बन लागू होने से राज्य को अधिक आय प्राप्त हो सकती है । राज्य में खनन होकर राज्य में ही स्थापित उद्योगों में कच्चे माल की तरह प्रयुक्त होने वाले अप्रधान खनिजों पर रॉयल्टी 5 गुना कम होने से राज्य में 2000 हजार से ज्यादा नए उद्योगों की स्थापना की संभावना होगी। राज्य के करीब 3000 फेल्डसपार ग्राइंडिंग उद्योगों की कुल स्थापित क्षमता करीब 2.25 करोड वार्षिक है जो कि कच्चे माल के सीधे ही निर्गमन के कारण 50 प्रतिशत से कम क्षमता पर चल रही है व काफी संख्या में ये उधोग बन्द भी हो चुके है। वर्तमान में अनुमानत: 1.8 करोड टन कच्चा फेल्सपार का वार्षिक रूप से राज्य बाहर निर्गमन हो रहा है है। इस तरह कच्चे ही माल के राज्य से बाहर निर्गमन होने पर आने वाले 2-3 वर्षों में राज्य के 2250 उधोग बन्द हो जाएंगे। अत: आपका ध्यानाकर्षण करते हुए प्रार्थना है कि राज्य के वर्तमान में स्थापित 3000 उद्योगों को जीवन दान देने व नए 2000 उद्योगों की स्थापना का मार्ग प्रशस्त कर राज्य की आय में बढ़ोतरी करने हेतु औधोगिक प्रयोजनार्थ राज्य से बाहर निर्गमित होने वाले अप्रधान खनिज फेल्सपार पर 5 गुना रॉयल्टी राशि भुगतान के लिए राजस्थान अप्रधान खनिज रियायत नियमो में संशोधन कर अनुग्रहित करें। अगर यह नियम कुछ अन्य अप्रधान खनिजो जो कि औधोगिक प्रयोजनार्थ राज्य से बाहर कच्चे ही निर्गमित हो रहें है पर भी लागू कर दिया जाय तो राज्य सरकार की आय में भारी वृद्धि होगी व सरकारी योजनाओं के लिए धन की उपलब्धता आसान होगी।

सुरेन्द्र सिंह राजपुरोहित
संयोजक, राजस्थान माइनर मिनरल उद्योग संघ

चीन बॉर्डर से पोरबंदर गुजरात के लिए निकली महिला साइकिलिस्ट का भरतपुर में स्वागत

भरतपुर में मीरा वेलंकर और तस्लीम टोपीवाला का स्वागत किया ।

भरतपुर, (निसं)। भरतपुर साइकिल क्लब ने केवलादेव नेशनल पार्क के गेट पर दो महिला साइकिलिस्ट मीरा वेलंकर और तस्लीम टोपीवाला का स्वागत किया। यह दोनों महिला राइडर चीन बॉर्डर से पोरबंदर गुजरात बॉर्डर के लिए अकेले निकली है।

मीरा वेलंकर अमेरिका से लाइफ साइंस में पीएचडी की डिग्री हासिल कर चुकी हैं और साइकिलिंग की दुनिया में एक जाना माना नाम है । उनके नाम अनेकों रिकॉर्ड हैं। 2020 में टेंडम साइकिल से कश्मीर से कन्याकुमारी जाने का रिकॉर्ड भी बना चुकी है । मीरा बताती हैं उन्होंने 2011 से साइकिल चलाना प्रारंभ किया और उसके बाद कभी मुड़कर नहीं देखा। मीरा लंबी साइकिलिंग यात्रा के अलावा बैंगलोर में बच्चों को साइकिल के लिए प्रति प्रेरित करती हैं और उन्हें प्रशिक्षित भी करती हैं। उनके साथ ही तस्वीर भी कई डीआरएमओ का हिस्सा रही है । बीसीसी अध्यक्ष लोकेश अग्रवाल के बताया दोनों महिला राइडर के जनून से हमे बहुत कुछ सीखने को मिलता है। स्वागत कार्यक्रम में बीसीसी पदाधिकारी नवीन शर्मा, सुमित अग्रवाल ने बी सी सी का प्रतीक चिन्ह दिया और मनीष गर्ग, शुभम गौर, गुलशन मलिक, राहुल कंसल,ने पुष्पवर्षा की और महिला राइडर रेणु सिकरबार ने उनका माल्यार्पण कर के स्वागत किया ।

दर्शनशास्त्री, कवि एवं समाज सुधारक संत रविदास

भारत में पूर्व मध्यकाल में संत कबीर, सूरदास, कुंभनदास, हरिदास, रामानंद, नामदेव, मीराबाई आदि अनेक कवि हुए हैं जिन्होंने ईश्वर भक्ति के साथ सामाजिक समरसता का संदेश दिया है, इन्हीं में से एक थे संत शिरोमणि रविदास। संत रविदास संत कबीर के समकालीन व गुरूभाई माने जाते हैं। महान संत रविदास दर्शनशास्त्री, कवि, समाज-सुधारक और ईश्वर के अनन्य भक्त थे। समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने वाले संत रविदास भारत के उन महापुरुषों में से एक थे जिन्होंने अपने कर्म और वचनों से सभी को अच्छाई, परोपकार और भाईचारे का सन्देश दिया।

संत शिरोमणि रविदास के जन्म को लेकर अधिकतर विद्वान सन् 1398 में माघ शुक्ल पूर्णिमा को उनकी जन्म तिथि मानते हैं। माघ पूर्णिमा रविवार के दिन जन्म होने के कारण उनका नाम रविदास रखा गया। उनके पिता का नाम राहू तथा माता का नाम करमा था। उनकी पत्नी का नाम लोना बताया जाता है। संत रविदास जिन्हें संत रविदास, गुरु रविदास, रैदास, रूहिदास और रोहिदास जैसे अनेक नामों से भी जाना जाता है। वे एक परोपकारी और दयालु व्यक्ति थे। दूसरों की सहायता एवं साधु संतों का साथ उन्हें बेहद पसंद था। उनके ज्ञान एवं वाणी की मधुरता से सभी लोग प्रभावित होते थे।

सही मायनों में देखा जाए तो मानवतावादी मूल्यों की नींव संत रविदास ने रखी। वे समाज में फैली जातिगत ऊंच-नीच के धुर विरोधी थे और कहते थे कि सभी एक ईश्वर की संतान हैं जन्म से कोई भी जात लेकर पैदा नहीं होता। इतना ही नहीं वे एक ऐसे समाज की कल्पना भी करते हैं जहां किसी भी प्रकार का लोभ, लालच, दु:ख, दरिद्रता, भेदभाव नहीं हो।

रविदास चर्मकार परिवार में पैदा हुए थे। ईश्वर भक्ति के साथ आजीविका

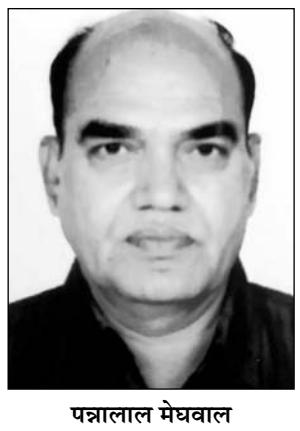

पन्नालाल मेघवाल

के लिए उन्होंने अपने पैतृक कार्य को ही चुना। ये जूते इतनी लगन और मेहनत से बनाते मानो स्वयं ईश्वर के लिए बना रहे हों। संत रविदास की अपने काम के प्रति प्रतिबद्धता इस उदाहरण से समझी जा सकती है एक बार की बात है कि रविदास से किसी ने गंगा स्नान के लिए साथ चलने का आग्रह किया। कर्म में लीन संत ने कहा कि मन सच्चा हो तो कठौती में भी गंगा होती है। यहीं से यह कहावत जन्मी मन चंगा तो कठौती में गंगा। उनके द्वारा कहे शब्द, दोहे, पद और अनमोल वचन (विचार) आज भी हम सभी को सदैव आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त करते है। संत शिरोमणि रविदास का मानना है था कि कोई भी व्यक्ति छोटा या बड़ा अपने जन्म के कारण नहीं बल्कि अपने कर्म के कारण होता है। संत शिरोमणि रविदास का कहना था कि परमात्मा के बिना मानव का भी कोई अस्तित्व नहीं है।

संत शिरोमणि रविदास का मानना था कि अज्ञानता के हटते ही मानव आत्मा, परमात्मा का मार्ग जान जाती है, तब परमात्मा और मनुष्य में कोई भेदभाव वाली बात नहीं रहती। जीव को यह भ्रम है कि यह संसार ही सत्य है किंतु वास्तव में संसार असत्य है। उनका मानना था कि जिसके हृदय में रात दिन राम समाये रहते है, ऐसा भक्त राम के समान है, उस पर न तो क्रोध का असर होता है और न ही कामभावना उस पर हावी हो सकती है। संत शिरोमणि रविदास का कहना था कि जिस तरह केले के पेड़ के तने को छिला जाये तो पत्ते के नीचे पत्ता फिर पत्ते के नीचे पत्ता और अंत में पूरा पेड़ खत्म हो जाता है लेकिन कुछ नही मिलता। उसी प्रकार इंसान भी जातियों में बाँट दिया गया है इन जातियों के विभाजन से इन्सान तो अलग अलग बंट जाता है और अंत में इन्सान भी खत्म हो जाते है लेकिन यह जाति खत्म नही होती है। उनका कहना था कि जब तक ये जातियां खत्म नहीं होगी तब तक इन्सान एक दूसरे से जुड़ नही सकता है यानि एक नहीं हो सकता है। इसलिए इस देश से जाति व्यवस्था समाप्त की जानी चाहिए।

पन्नालाल मेघवाल,
वरिष्ठ लेखक एवं स्वतंत्र पत्रकार।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 16 फरवरी, 2022

माघ मास शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा, बुधवार, विक्रम संवत 2078, आश्लेषा नक्षत्र दिन 3:14 तक, शोभन योग रात्रि 8:43 तक, विष्टिकरण रात्रि 8:43 तक, चन्द्रमा दिन 3:14 पर सिंह राशि में प्रवेश करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मकर, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-धनु, बुध-मकर, गुरू-कुम्भ, शुक्र-धनु, शनि-मकर, राहु-वृष, केतु-वृश्चिक राशि में।

कुमार योग रात्रि 10:27 से सूर्योदय तक है। भद्रा दिन 10:05 तक रहेगी।

आज माघी पूर्णिमा, सत्य पूर्णिमा व्रत है। आज होलिका रोपण, माघ स्नान समाप्त होगा। आज गुरु रविदास और भरवी जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:54 तक, शुभ 11:17 से 12:41 तक, चर 3:28 से 4:52 तक, लाभ 4:52 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 7:07, सूर्यास्त 6:15

मेष
परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। कारोबारी अनुबंध प्राप्त होंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

मिथुन
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

कर्क
मन:स्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। स्वास्थ्य में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

सिंह
अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। मन में भय और असंतोष बना रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी।

कन्या
अपने आर्थिक/वित्तीय मामलों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

वृश्चिक
धार्मिक-सामाजिक समारोह में भाग लेने का अवसर मिलेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेंगे।

धनु
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

मकर
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक यात्रा संभव है।

कुंभ
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन
व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी और उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।